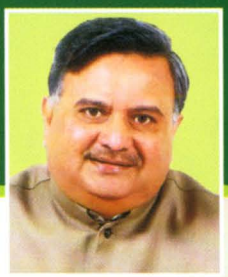

डॉ. रमन सिंह
माननीय मुख्यमंत्री एवं
अध्यक्ष

औषधीय पौधों की कृषि
सर्पगंधा

श्री विक्रम उसेंडी
माननीय वन मंत्री एवं
उपाध्यक्ष

Rauwolfia serpentina

उपयोगी भाग - जड़

सामान्य विवरण - सर्पगंधा सदाहरित बहुवर्षीय झाड़ीनुमा पौधा है, जिसकी ट्यूबरस जड़ें मुख्यतया शाखाओं में 0.5 से 2.5 से.मी. के व्यास में होती है। जडें भूमि में 40 से 60 से.मी. गहराई तक होती है। जड़ों में एल्केलाइड्स बहुतायत में मिलते है। वर्तमान में इसकी खेती सफलतापूर्वक अनेक क्षेत्रों में की जा रही है। सर्पगंधा की फसल 18 माह की होती है।

प्राप्ति स्थान - यह मुख्य रूप से हिमालय की तलहटी से बंगाल आसाम, मेघालय की सीमा में पूर्वी व पश्चिमी तट, छोटा नागपुर, बिहार, तमिलनाडु की अन्ननमलाई श्रृंखला, केरल के दक्षिण पश्चिम भाग से छत्तीसगढ के बस्तर क्षेत्र तक समुचित मात्रा में पाया जाता है।

कृषिकरण - सर्पगंधा की अच्छी फसल के लिए कुछ हल्की सी अम्लीय भूमि आवश्यक है। यदि भूमि का पी.एच. मान 6 से 8.5 तक हो, तो अच्छी उपज ली जा सकती है। यह बालुई-दोमट से लेकर काली कपासीय भूमि जिसमें जीवाश्म की मात्रा अधिक हो एवं जल निकास की उत्तम व्यवस्था हो वह भूमि सर्पगंधा की खेती के लिए उपयुक्त है। सर्पगंधा का प्रवर्धन बीज, जडों की कटिंग एवं तने की कटिंग से किया जा सकता है। सामान्यतया सर्पगंधा के बीज का अंकुरण 10 से 50 प्रतिशत तक ही होता है। एक वर्ष से अधिक समय तक संग्रहीत बीजो का अंकुरण नहीं होता है। अतः यह आवश्यक है कि सितम्बर से दिसम्बर माह में फसल से लिए गए बीजों का उपयोग किया जाए।

जुलाई के प्रथम से द्वितीय सप्ताह में अच्छी वर्षा होने के समय सर्पगंधा के पौधों की जड़ों को 1/2 घंटे तक ट्राइकोडर्मा से उपचारित कर कतार से कतार की दूरी 45 से.मी. व पोध से पौध 30 से.मी. की दूरी पर जड़ सहित प्रत्यारोपण कर देना चाहिए। प्रत्यारोपण के बाद यदि वर्षा न आवें तो सिंचाई करना आवश्यक होता है। सर्पगंधा की फसल 18 माह की सिंचित फसल है। अतः शुरू के दिनों में वर्षा न होने पर खेत में आवश्यकतानुसार 7 दिन में सिंचाई करें। पौध जम जाने के उपरान्त सर्दियों में प्रत्येक 20 दिन में एवं गर्मियों में प्रत्येक 10 दिन में सिंचाई करते रहना चाहिए।सर्पगंधा की वृद्वि की प्रारंभ अवधि में इसके क्षेत्रों की निंदाई की आवश्यकता नहीं होती। विशुद्व रूप से सर्पगंधा के रोपण में वर्ष में 2 से 3 बार एव अंतरवर्ती फसल होने पर वर्ष में 5 से 6 बार निदाई की जानी चाहिए। इसकी फसल में 10 से 12 क्वि. गोबर खाद प्रति एकड की मात्रा से भूमि तैयारी हेतु डालने से उत्साहवर्धक परिणाम प्राप्त होते है

रोपण के 18 माह बाद जनवरी माह के आसपास पौधे से प्रचुर मात्रा में एलकेलाइड्स प्राप्त किया जा सकता है। जड़ों को साफ करते समय जड़ों की छाल अलग नहीं होनी चाहिए। एक एकड़ भूमि में लगभग 8 से 9 क्वि. सूखी जड़े प्राप्त हो जाती है। सूखी जडों में 8 से 10 प्रतिशत तक नमी रहती है। सूखी जडों को पॉलिथीन के आवरण के जूट के बोरों में ठंडी सूखी जगह में रख दिया जाता है।

उपयोग - इसमें पाए जाने वाले प्रमुख घटक रिसर्पिन, सर्पेन्टिन, एजमेलिसिन आदि है जो इसकी जड़ों से मिलते है। सर्पगंधा का मुख्य उपयोग उच्च रक्तचाप, अनिद्रा, उन्माद, हिस्टीरिया, सर्पकाटने आदि बीमारियों को रोकने वाली औषधियों के निर्माण में किया जाता है।

आर्थिक मूल्यांकन :-

निवेश मूल्य (प्रति एकड़ रू. में)	पैदावार मूल्य (प्रति एकड़ रू. में)	उपज	वित्तीय सहायता
25,000/-	40,000/-	6 क्वि. सूखी जडें	लागत मूल्य का 50%

टिप्पणी -
* उपरोक्त वित्तीय सहायता "औषधीय पौधों के राष्ट्रीय मिशन" योजना के अंतर्गत प्रदाय की जा सकती है।
* औषधीय फसलों का बाजार उतार-चढ़ाव भरा होता है अतः आर्थिक मूल्यांकन में अंतर होना संभावित है।
* भूमि की उपजाऊ क्षमता, जलवायु एवं फसल प्रबंधन के आधार पर उपज में परिवर्तन होना संभव है।

विस्तृत जानकारी हेतु कृपया सम्पर्क करें :-

छत्तीसगढ़ राज्य औषधीय पादप बोर्ड

(समिति पंजीयन क्रमांक 2538 दिनांक 17.08.2009)

मेडिकल कालेज रोड, रायपुर (छ.ग.) 492001, फोन : 0771-2522056, फैक्स : 2522057

ई-मेल : cgvanoushadhiboard@yahoo.co.in, वेबसाईट : www.cgvanoushadhi.gov.in